प्रकृति की सैर : एक शैक्षणिक साधन

मद्दीरला साई प्रवीण

जब बच्चे विभिन्न प्रकार के बाहरी स्थानों में खेलकर सीखते हैं तो यह सीखना बहुत विस्तृत होता है और उन्हें सकल मोटर और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। प्रकृति की सैर एक ऐसा तरीक़ा है जिससे आँगनवाड़ी केन्द्रों में बच्चे अपने परिवेश से सीखते हैं। प्रकृति की सैर यानी खुली जगह की सैर, जिसके द्वारा शिक्षक बच्चों को किसी विशेष विषय पर विशिष्ट जानकारी देने की योजना बनाते हैं।[i] इससे बच्चों की दिनचर्या में थोड़ा बदलाव आ जाता है, जिसके दौरान वे पर्यावरण के सम्पर्क में आते हैं और उसके साथ अन्तःक्रिया कर सकते हैं। इस तरह की अन्तःक्रिया में बच्चे ख़ुशी और आश्चर्य का अनुभव करते हैं।

प्रकृति की सैर के प्रकार

शिक्षक द्वारा यात्रा के तय किए हुए उद्देश्य के आधार पर बच्चों को खेतों, बग़ीचों, खेल के मैदानों या किसी स्कूल में ले जाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि पेड़-पौधों का विषय चल रहा हो तो शिक्षक बच्चों को किसी बग़ीचे में ले जा सकते हैं। सीखना तब स्वाभाविक रूप से होता है, जब बच्चे बाहर अपने आसपास के वातावरण का अनुभव कर रहे होते हैं। ये सैर पास के डाकघर, साइकिल मरम्मत की दुकान, पुलिस स्टेशन, पूजा स्थल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, बढ़ई की दुकान आदि की भी हो सकती है, जहाँ बच्चे समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत कर सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं। इस प्रकार की सैर, संवेदी प्रेरक अनुभवों के माध्यम से, व्यवहारिक व क्रियाशील रूप से सीखने के असीमित अवसर प्रदान करती है।

पेड़-पौधों को देखने के लिए प्रकृति की सैर

आइए, आँगनवाड़ी के बच्चों के साथ सैर पर चलें और इस शिक्षाशास्त्र की पूरी प्रक्रिया को समझें। प्रकृति की सैर के एक दिन पहले शिक्षिका ने माता-पिता को सूचित किया और उनसे कहा कि अगले दिन अपने बच्चे के साथ पानी की बोतल और नैपकिन भेजें। सैर पर जाने से पहले शिक्षिका ने सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ कीं (उदाहरण के लिए, काग़ज़ और क्रेयॉन ले जाना) और बच्चों को उन स्थानों के बारे में भी बताया जहाँ वे जाने वाले थे। शिक्षिका ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि उन सभी को समूह में और एक साथ रहना चाहिए।





सैर

सैर आँगनवाड़ी से शुरू हुई, जिसमें शिक्षिका आगे चल रही थीं और बच्चे उनके पीछे एक क़तार में थे। आँगनवाड़ी सहायिका अन्तिम सिरे पर थीं। बच्चे एक खेत में गए, जहाँ सब्ज़ियाँ उगाई गई थीं। शिक्षिका ने बच्चों को वहाँ उग रहे पौधों के अलग-अलग अंगों को देखने को कहा जैसे फूल, तने, कलियाँ और सब्ज़ियाँ। बच्चों को पौधों, फूलों, फलों को छूकर अनुभव करने का अवसर मिला। फिर उन्होंने शिक्षिका से कुछ सवाल पूछे जैसे कि पौधे कैसे बढ़ते हैं? क्या पौधे खाना खाते हैं? चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए, शिक्षिका ने पौधों के बारे में और बातें भी कीं जैसे पौधों के अंग, पौधे कैसे जीवित रहते हैं और पौधों के उपयोग आदि।

बच्चों को बाइक, ट्रैक्टर, भेड़ों का झुण्ड, गायें और भैंसें भी दिखाई दीं। उन्होंने अपने पड़ोसियों को देखकर हाथ हिलाए। इस तरह के अनुभव बच्चों की मनःस्थिति को तरोताज़ा कर

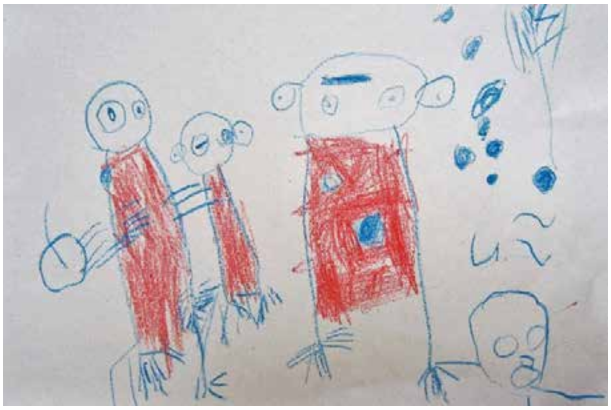
देते हैं। वे उस दुनिया में प्रवेश करने का आनन्द लेते हैं जिसमें वे अन्यथा स्वतंत्र और नियमित रूप से घूमते हैं। एक बच्ची ने अपने परिवार की भैंसों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की तो दूसरा अपने साथियों को वह स्थान दिखाकर बड़ा ख़ुश हुआ जहाँ से वे पानी लाते थे।



अनुवर्ती गतिविधियाँ

फिर समूह एक मन्दिर में आया, जहाँ पर्याप्त खुली जगह थी। वहाँ शिक्षिका ने बच्चों को एक गोले में बैठाया, उन्हें स्थिर करने के लिए एक वार्म-अप गतिविधि की और इसके बाद, बच्चों ने सैर के दौरान क्या देखा — इस विषय पर बातचीत की। जो बच्चे आँगनवाड़ी केन्द्र में होने वाली चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते थे, उन्होंने भी यहाँ ख़ुशी-ख़ुशी अपने अनुभव साझा किए।

फिर शिक्षिका ने बच्चों से उन चीज़ों के चित्र बनाने को कहा जो उन्होंने सैर के दौरान देखी थीं। बच्चों ने क्रेयॉन का उपयोग करके चित्र बनाए (जो सूक्ष्म मोटर कौशलों के विकास के लिए अच्छा अभ्यास है)। उन्हें जितनी बातें आसानी से याद आईं, उनको शामिल करते हुए उन्होंने सुन्दर और रचनात्मक कला के रूप में अपनी ख़ुशी व्यक्त की। शिक्षिका इस गतिविधि को आँगनवाड़ी केन्द्र के अन्दर जितना कर सकती थीं उससे कहीं



गाँधी प्रतिमा (जो बच्चों ने रास्ते में देखी थी) और उसके बग़ल में खेल रहे दो बच्चों का चित्र, जिसे एक बच्चे ने बनाया।



बच्चे समझा रहे हैं कि नीले घेरे झीलें हैं और नारंगी घेरे धान के खेत हैं।

अधिक अब कर पाईं क्योंकि बच्चों ने जो कुछ भी देखा, वह उनके दिमाग में ताज़ा था।

सकल मोटर कौशलों के विकास के अवसर प्रदान करने के लिए शिक्षिका ने एक खेल तैयार किया था जिसमें बच्चों को गिरे हुए पत्ते, टहनियाँ और फूल इकट्ठा करने का निर्देश दिया गया था। उन्हें इकट्ठा करते समय बच्चे ख़ुशी से हँस रहे थे, एक-दूसरे से बात कर रहे थे, 'मुझे और पत्ते मिल गए', तुम्हें एक बड़ी डण्डी मिली' आदि। जहाँ आवश्यक लगा वहाँ शिक्षिका ने हस्तक्षेप किया और 'ज़्यादा व कम', 'बड़े और छोटे' की अवधारणाओं के बारे में उनकी समझ का निर्माण करने के लिए एक सुचारू चर्चा आयोजित की।

एक सुखद वातावरण में बच्चे अपने परिवेश की खोजबीन करने, अन्य बच्चों के साथ खेलने और शिक्षक द्वारा संचालित गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रेरित होते हैं। ऐसे ख़ुशनुमा वातावरण में उनके आपस में लड़ने-झगड़ने की बहुत कम गुंजाइश होती है। फूल, पत्ते न तोड़ना, सड़क पर न दौड़ना, सावधानी से सड़क पार करना जैसे निर्देशों का पालन करने से बच्चे अच्छे सामाजिक व्यवहार का पालन करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

निष्कर्ष

व्यवहारिक अनुभवों से सीखना बच्चों की मानसिक और व्यवहार संरचना में लम्बे समय तक चलने वाला प्रभाव डालता है। इसमें सफलता तब मिलती है जब हम बच्चों को केन्द्र से बाहर लाते हैं और उन्हें प्रकृति में खोज और प्रयोग करने के अवसर प्रदान करते हैं। शिक्षक को चाहिए कि इस पूरी प्रक्रिया में वे बच्चों को अपनी समझ का निर्माण करने के लिए उपयुक्त सहायता प्रदान करें।

प्रकृति की सैर एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक साधन है, जो किसी विषयगत पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत होने पर एक विशिष्ट विषय के बारे में बच्चों की समझ, सोच और जिज्ञासा को

बढ़ाने में सहायता कर सकता है। उपयुक्त अनुवर्ती गतिविधियों के साथ करवाई गई प्रकृति की सैर से बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक, भाषा, संज्ञानात्मक, शारीरिक और रचनात्मक पहलुओं का विकास हो सकता है। प्रकृति की सैर के दौरान बच्चों की रुचि के स्तरों में वृद्धि होती है, जो अनुवर्ती गतिविधियों में उनकी भागीदारी को बढ़ाता है और इस प्रकार एक ख़ुशहाल वातावरण में उन्हें सीखने के अवसर प्रदान करता है।



आभार : लेखक इस लेख को लिखने में योगेश जी आर (ईसीई संगारेड्डी) की मदद और मार्गदर्शन के लिए आभारी हैं।

[1] ईसीई संगारेड्डी आँगनवाड़ी शिक्षकों की क्षमता का निर्माण करने के लिए की गई अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की एक पहल है। इसके तहत, आँगनवाड़ी शिक्षकों को अपने केन्द्रों में विकासात्मक रूप से उपयुक्त सीखने का कार्यक्रम लागू करने में मदद की जाती है। पौधे, फल या मौसम जैसे 14 विषयों के लिए विस्तृत योजनाएँ बनाई गई हैं, जिनके बारे में बच्चे साल भर पता लगाते रहते हैं।

References

Herrington, S. &. (1998). *Landscape Interventions: New Directions for the Design of Children's Outdoor Play Environments.* Landscape and Urban Planning, 42, 191-2015

Kellert, S. R. (2004). *Building for Life: Designing and Understanding the Human-Nature Connection.* Island PressC

Kuo, F. &. (2001). *Aggression and Violence in the Inner city: Effects of Environment via Mental Fatigue.* Environment & Behavior, Special Issue 33(4)., 543-571.

Taylor, A. e. (2001). *Coping with ADD: The Surprising Connection to Green Play Settings.* Environment and Behaviour- Edition 33, 33: 54-77.



मद्दीरला साई प्रवीण वर्तमान में कर्नाटक के संगारेड्डी जिला संस्थान में आरम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) के स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के बाद वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़े हैं। उन्हें कहानी पढ़ना और संगीत सुनना पसन्द है। उनसे maddirala.praveen@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल